उच्चाभिलाषी ग्रहों का लक्षण

रविमीने शशी मेषे कर्कौ धनुषि चाधिते।
सिंहे बुधो गुरुर्युग्मे शुक्रः कुम्भे तथैव च॥
शनिः कन्यास्थितो ह्युच्चाभिलाषी समुदाहृतः॥

मीनांत में सूर्य, मेषान्त में चंद्र, धनु में मंगल, सिंह में बुध, मिथुन में गुरु, कुम्भ में शुक्र और कन्या में शनि हो तो ये ग्रह इस स्थिति में उच्चाभिलाषी कहलाते हैं।

उच्चाभिलाषी ग्रहों के फल

उच्चाभिलाषिणः खेटा जन्मकाले पतन्ति चेत्।
स नरो भूपपूज्यः स्यादंशस्य नृपतिर्भवेत्॥

जन्म समय में ग्रह यदि उच्चाभिलाषी हों तो वह मनुष्य राजमान्य तथा अपने कुल में श्रेष्ठ होता है।

बली ग्रह का लक्षण

उदितः स्वगृहस्थश्च मित्रगेहे च तुङ्गगः।
मित्रवर्गेण दृष्टश्च स ग्रहः सबलः स्मृतः॥

जो ग्रह उदित, अपने घर में मित्र के घर में, अपने उच्च में और मित्र से दृष्ट हो वह बली कहलाता है।

सबल भाव का लक्षण

स्वामिना बलिनो दृष्टः सबलैश्च शुभैर्ग्रहैः।
न दृष्टो न युतः पापैः स भावः सबलः स्मृतः॥

जो भाव अपने बली स्वामी से तथा शुभग्रह से युत दृष्ट हो, उस पर पापग्रह की दृष्टि न हो तो वह बली कहलाता है।

मूकजन्माज्ञान

पापग्रह राशि-सन्धि में और चंद्र वृष में हो, उन पर मंगल और शनि की दृष्टि हो तो वह जातक गूँगा होता है। यदि बुधग्रह की भी दृष्टि हो तो अधिकतम में बोलता है।

विशिष्टयोग

जन्म समय लग्न से सप्तमभाव पर्यन्त सब ग्रह हों तो उस जातक के घर में 30वें वर्ष में हाथी बाँधे जाते हैं और उसका 30वें वर्ष में भाग्योदय होता है।

विशिष्टराजयोग

यदि केन्द्र में चन्द्रमा और त्रिकोण में सूर्य हो तो नीच कुलोत्पन्न भी राजा होता है।

3 ग्रह यदि अपने घर के हों तो जातक राजमंत्री, 3 ग्रह उच्च के हों तो राजा होता है। यदि 3 ग्रह नीच के हों तो उच्च कुलोत्पन्न भी दास होता है एवं 3 ग्रह अस्त हों तो जातक महामुर्ख होता है।

ज्योतिषाचार्य रवि रंजन भास्कर
गणित एंव फलित ज्योतिष

हस्तरेखाविद, ज्योतिषविद एवं वास्तुशास्त्र विशेषज्ञ

भास्कर ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र

GAYA, BIHAR

संपर्क सूत्र + Whatsaap - 9801326260

वेबसाइट - www.astrologerbhaskarjyotish.com